

भक्तपुर तलेजुको राजेन्द्रविक्रम शाहको अहिलेसम्म प्रकाशमा नआएको ताम्रपत्र

-डा. पुरुषोत्तम लोचन श्रेष्ठ

भक्तपुर राजदरबारको मूलचोकको दक्षिणपट्टिको लड तलेजु भवानी र मानेश्वरीदेवी प्रतिष्ठापित आगम मन्दिर हो । यस आगम मन्दिरको पहिलो तलाको पछाडिपट्टि पूर्वतर्फको कोठाभित्रको पश्चिमाभिमुख ढोकाको बायाँपट्टिको बापासि (काठको गारो)मा यो ताम्रपत्र ठोकिराखिएको छ ।^१ ३३३/४" लम्बा र २३१/२ चौडा यस ताम्रपत्रको माथिल्लो दायाँपट्टिको भागमा रोजेन्द्रविक्रमको मोहरछाप लागेको छ, त्यसदेखि केही माथि बायाँपट्टि (ताम्रपत्रको शीर्षमा) श्रीतलेजु, श्रीदुर्गाजु लेखिएको छ । यहाँ विक्रम संवत् १८८७ दिइएको छ ।

मूलपाठ

- स्वस्ति श्री गिरिराजचक्र चुडामणि नरनारायणेत्यादि विविध विरुद्धावली विराजमान मानोन्नत श्रीमन्महाराजाधिराज श्रीश्री महाराजा राजेन्द्रविक्रम शाह वहादुर सम्से रजङ्ग दे वानाम् सदा समरविजयिनाम्
- आगे भादगाउँका लाई सम्वत् १८८६ साल मिति ज्येष्ठ वदि १२ रोज ६ का दिन हाम्रा वाहुलिवाट संकल्प गरी षेत ३- था पूजा गुठी राषना निमित्य भादगाउँका ठूला सेराका षेतमध्ये षेत १-

लुकुंदोल षेत मुरि १६ तस्को साध पूर्व रैकर षेतको आलिसाध लुह -

३. किल दिच्छन उत्तर सेरा षेतको आलिसाध लुहकिल पश्चिम बाटो साध लुहकिल दफे लुकुंदोल षेत मुरि १७ तस्को साध पूर्व षस्यांग् षोलाको डिल र सन्यासिको विर्ता षेतको आलिसाध लुहकिल दिच्छन पश्चिम सेरा षेतको आलिसाध लुहकिल उत्तर ब्राह्मणको विर्ता षेतको आलिसाध -

४. ध लुहकिल चांथी षेत मुरि १३ तस्को साध पूर्व रैकर षेतको आलिसाध लुहकिल दिच्छन बाटो र रैकर षेतको आलिसाध लुहकिल पश्चिम कुलाको ढिक साध लुहकिल उत्तर प्रजाको सुना षेतको आलिसाध लुहकिल पलेवु षेत मुरि ४ पाथि १० तस्को साध पूर्व कुलाको डिल साध

५. लुहकिल दिच्छन उत्तर प्रजाके सुना विर्ता षेतको आलिसाध लुहकिल पश्चिम लक्ष्मिनारायण डिटाको सदावर्त षेतको आलिसाध लुहकिल दफे पलेवु षेत मुरि ७ पाथि १० तस्को साध पूर्व दिच्छन पश्चिम प्रजाको सुना विर्ता षेतको आलिसाध लुहकिल उत्तर स-

६. दावर्त षेतको र प्रजाको सुना षेतको आलिसाध

- लुहकिल लुकुदोल षेत मुरि ।२४ तस्को साध पूर्व दच्छन पश्चिम उत्तर सेरा षेतको आलिसाध लुहकिल व्याना षेत मुरि ।१० तस्को साध पूर्व ब्राह्मणको विर्ता षेतको आलिसाध लुहकिल दच्छन गुठी षेतको आलिसाध लुह -
७. किल पश्चिम बाटो साध लुहकिल उत्तर सेरा र ब्राह्मणका विर्ता षेतको आलिसाध लुहकिल दफे व्याना षेत मुरि ।६ तस्को साध पूर्व रैकर षेतको आलिसाध लुहकिल दच्छन ब्राह्मणको विर्ता षेतको आलिसाध लुहकिल औ ऐजन गार्डका र कमि गैन्हले जागिर गरि बायाका षेतमध्ये षेत २ धालाषुसि षेत मुरि ।४ पाथि ।० तस्को साध पूर्व उत्तर प्रजाका सुना विर्ता षेतको आलिसाध लुहकिल दच्छन बाटो र रैकर षेतको आलिसाध लुहकिल पश्चिम रैक-
९. र .बाभो साध लुहकिल वपिको षेत मुरि ।७ तस्को साध पूर्व प्रजाको सुना षेतको आलिसाध लुहकिल दच्छन रैकर .बाभो साध लुहकिल पश्चिम सानु बाटो साध लुहकिल उत्तर षेतको आलिसाध लुहकिल, यामिताको षेत मुरि ।४ पाथि ।० तस्को साध पूर्व पश्चिम रै -
- १० कर षेतको आलिसाध लुहकिल दच्छन. प्रजाको सुना विर्ता षेतको आलिसाध लुहकिल उत्तर बाटो साध लुहकिल वाकादोल षेत मुरि ।८ तस्को साध पूर्व पश्चिम रैकर षेतको आलिसाध लुहकिल दच्छन उत्तर प्रजाका सुना विर्ता षेतको आलिसाध लुहकिल मुसु-
११. च्या कोत्पा षेत मुरि ।० तस्को साध पूर्व दच्छन पश्चिम उत्तर रैकर षेतको आलिसाध लुहकिल दफे मुसुच्या कोत्पा षेत मुरि ।२० तस्को साध पूर्व दच्छन पश्चिम उत्तर रैकर षेतको आलिसाध लुहकिल मुगथौ षेत मुरि ।४ तस्को साध पूर्व उत्तर प्रजाको सुना षेतको आ-
१२. लि साध लुहकिल दच्छन गुठी षेतको आलिसाध
- लुहकिल पश्चिम सेरा षेतको आलिसाध लुहकिल गोडे षेत मुरि ।२१ तस्को साध पूर्व रैकर प्रजाको सुना विर्ता षेतको आलिसाध लुहकिल उत्तर गुठी षेतको आलि-
१३. साध लुहकिल तप्याषेत मुरि ।४ पाथि ।० तस्को साध पूर्व प्रजाको सुना र रैकर षेतको आलिसाध लुहकिल दच्छन गुठी षेतको आलिसाध लुहकिल पश्चिम उत्तर रैकर षेतको आलिसाध लुहकिल वदेको षेत मुरि ।६ तस्को साध पूर्व दच्छन पश्चिम उत्तर प्रजा-
१४. को सुना विर्ता षेतको आलिसाध लुहकिल गुवु षेत मुरि ।० पाथि ।० तस्को साध पूर्व उत्तर पश्चिम प्रजाको सुना विर्ता षेतको आलिसाध लुहकिल दक्षिण सानु बाटो साध लुहकिल गुवु षेत मुरि ।४ पाथि ।० तस्को साध पूर्व सानु बाटो साध लुहकिल दच्छन पश्चिम उत्तर-
१५. प्रजाको सुना षेतको आलिसाध लुहकिल कुपाकोव्वाक समेत षेत मुरि ।९ तस्को साध पूर्व रैकर प्रजाको सुना विर्ता षेतको आलिसाध लुहकिल दच्छन पश्चिम उत्तर प्रजाको सुना विर्ता षेतको आलिसाध लुहकिल नासाषु षेत मुरि ।३ तस्को साध पूर्व उत्तर प्रजाको सुना विर्ता षेतको आलिसाध लुहकिल दच्छन गुठी षेतको आलिसाध लुहकिल पश्चिम बाटो सा-
१६. ध लुहकिल नासाषुव्वाक समेत षेत मुरि ।२ पाथि ।० तस्को साध पूर्व पश्चिम उत्तर प्रजाको सुना षेतको आलिसाध लुहकिल बाटो साध लुहकिल मसांदोल षेत मुरि ।४ तस्को साध पूर्व पश्चिम दच्छन उत्तर प्रजाको सुना विर्ता षेतको आलिसाध लुहकिल मुगुजोल षेत मुरि ।४ पाथि ।० तस्को साध पूर्व गुठी षेतको आलिसाध लुहकिल दच्छ-
१७. न पश्चिम उत्तर प्रजाको सुना विर्ता षेतको आलिसाध लुहकिल चुजिषेत मुरि ।३ पाथि ।० तस्को साध पूर्व प्रजाको सुना विर्ता षेतको आलिसाध

- लुहकिल दच्छन पश्चिम उंतर रैकर षेतको
आलिसाध लुहकिल सिमिगाल षेत ।८ पाथि १०
तस्को साध रैकर
१८. षेतको आलिसाध लुहकिल दच्छन प्रजाको सुना
षेतको आलिसाध लुहकिल पश्चिम ब्राह्मणको विर्ता
षेतको आलिसाध लुहकिल दिगुपा षेत मुरि १९
तस्को साध पूर्व बाटो र रैकर षेतको आलिसाध
लुहकिल दच्छन बाभो र रैकर षेतको आलिसाध
लुहकिल पश्चिम रैक-
१९. र षेतको आलिसाध लुहकिल उंतर बाटो र विर्ता षेत
आलिसाध लुहकिल न्हाकंदोल षेत मुरि ।२ तस्को
साध पूर्व दच्छन पश्चिम उंतर प्रजाको सुना विर्ता
षेतको आलिसाध लुहकिल सुइति षेत मुरि १६
तस्को साध पूर्व घोलाको धिक्साध लुहकिल दच्छन
वि-
२०. र्ता र रैकर वाभो साध लुहकिल. पश्चिम . प्रजाको
विर्ता षेतको आलिसाध लुहकिल. उंतर वाटो साध
लुहकिल दफे सुइति षेत मुरि ।८ तस्को साध पूर्व
रैकर विर्ता षेतको आलिसाध लुहकिल दच्छन विर्ता
र रैकर वाभो साध लुहकिल . पश्चिम रैकर वाभो
साध लुह-
२१. किल उंतर प्रजाको सुना विर्ता षेतको आलिसाध
लुहकिल य्याथौ षेत मुरि ।५. पाथि १५ तस्को साध
पूर्व दच्छन वाटो साध लुहकिल पश्चिम उंतर
प्रजाको सुना विर्ता र रैकर षेतको आलिसाध
लुहकिल. यति सवै सिमाना भित्र ज्मा षेत ।३ को
सर्वकर अकर सर्वांक माफ गरि था पु-
२२. जा गुठीको. मोहर गरि बक्स्याको ताम्बापत्र
गरिबक्स्यौ. येस गुठीका गुठीहार भैरवसिंले गुठी
षेतका उत्पन्नले तपसीलमा लेष्या बमोजिमको
पूजा चलाउनु. असिनाले षादा. किराले काट्यामा
र नरोपियामा सेष बाँकि रह्याको र भाउका
किफाईतले. पूजा न अडकाइ
२३. चलाउनु. उहा प्रान्तको केहि बाँकि रहिगयो भन्या
- गुठीहारले भोग्य गर्नु. यो गुठी संकल्प हुँदा. संकल्प
वाक्य पहन्या पुरोहित जदुनाथ पंडित अर्ज्याल. पानि
हालच्या. श्री जनरल भीमसेन थापा. साध लाउन्या
सधियार थरघर मोदनाथ अर्ज्याल. मित्र सर्मा पंथ
ववहाल टोलको
२४. डगोल नाइक्या मध्यां अमितसिं डगोल. वम्हटोलको
हेमन्तसिं डगोल द्वाच्या लक्ष्मदास. कमानसिं
ढलपाहरु रत्न. भिमसेन धंजु. गोविन्द. भाजुदेव
राजविर. मोहि नाइक्या पालसिं. मोहि नाइक्या
दयाराम. मोहि नाइक्या महन्त. मोहिहरु पदम
विचारि. अडै
२५. जोगनारायण दुर्गादास. विस्नु नारायण. विन्दरसिं
जैसि. देवनारायण. सिवदत्तकौ. नारायण दुवा.
गयासिं दुवा. भैरवसिं. गुठीहार. रामनरसिं प्रधान्.
मोहिनाइक्या गयासिं. जोगनारायण. मोहि लघ्मिसिं
षडका. अम्बरसिं षडका. भाजुराम. धनबन्त. गोजन
तलाछ्को. गंगाराम भगि सालमि. सिधि नारायेन.
सिपाहि छत्रसिं थापा. कुष्णवीर थापा. मनिकृस्न.
तेजनारायेन दाम्या सार्कि
२६. तपसील.
- मिति वैसाष शुदि ३ रोजका दिन था पूजा । गर्नाका
साराजाम जिनीसी षर्चं ६७ ॥//॥
- सेता चावल मुरि ।१/३ हकुवा चावल मुरि
- २/१४/४ चिहुरा स्यावजिके धान मुरि ।१ रोटिके गहु केराउ
- पाथि १३/४ नगदि षर्चके ५२॥।
- (पहिलो लहर-)
- | भोज | |
|--------------------|---------------------|
| रागा १ के | १२ |
| बोका ७ के | १०॥ |
| हास १ के | ॥. |
| पूजा | पूजा लाग्नाप्राप्ति |
| रोटिके घ्यू धार्नि | ३ के ३ लीनिए |

| | | |
|-----------------------------|--------|--------------|
| दिपमालाके ध्यू धार्नि | ७॥ के | ७ ॥ |
| धुप नैवेदको ध्यू तोला | ४ के | ॥ |
| चिनि | | |
| रोटिके चिनि धार्नि ३ के | २॥ | |
| पूजाके चिनि पाव १ के | /। | |
| नैवेदको चिनि तोला | ४ के | ५॥ |
| पंचामृतके दुद पाव २ के | ॥ ५ ॥ | |
| दुद | | |
| षावाके दुद पाथि १ के | । | |
| अचारहरूले लैजान्या दुद पाथि | १ के । | (तेश्रो लहर) |
| सुपारि सेर | १ के | ॥ ॥ |
| भेटिघाटि गैङ्ह के | २। | |
| पूजाहाराहरूका भोजके | १४ | ॥ ॥ |
| दुद पाथि ५ के | १ ॥' | |
| अदुवा धार्नि | १ के | „ ॥ |
| कोटल दहि पाथि | ३ के | |
| सुठो तोला | ४ के | ५ ॥ |
| पात्त धार्नि | ४ के | , ॥ |
| दहि गोटा ३० के | १।"॥ | |

(दोस्रो लहर)

| | |
|------------------------|------|
| वत्ति धूप १०० के | / |
| सिंदु पाव १ के | । |
| श्रीषंड चन्दन तोलाद के | " |
| नरिवल गोटा | २ के |
| मसला गैङ्हके | |
| मषान तोला | ८ के |
| अलैचि दाना तोला | ४ के |
| छोहरा तोला | ४ के |
| लवागमासा | ६ के |
| दात्या वधर तोला | ४ के |
| मरिच तोला | ८ के |
| अलैचि तोला | ८ के |
| षयरगोलि तोला | २ के |
| पानविरा २४ के | " |

| | | |
|-----------------------|---------|------|
| पंचामृतके | | |
| महपाव १ के | , | |
| अदुवाल के | " | |
| बेसारमाना | २ के | , |
| रायोमाना २ के | , | |
| ध्यू पाव २ के | „ | |
| दारूवाभारि | ४ के | ॥. |
| नुन माना ४ के | ॥. | |
| हासका फुल गोटा १२ | | के । |
| पंचरागि कपरा हात ५ के | | ॥. |
| जजंका २०० के | / | |
| तीलमाना १ के | / | |
| भटमास पाथि | ३ के | ॥. |
| गरि तोला | ४ के | / |
| मासु धार्नि | २ के | ॥. |
| पाट् चोलि | १ के | „ |
| धागो तोला | १० के | „ |
| गोकुल धुप तोला | ८ के | / |
| धूवा कपरा थान | २ के | १ |
| केतकि पाता | १ के | २ |
| गुँड पाव २ के | ,॥ | |
| पगरिथान २ के | ३ | |
| दालचिनि तोला | ४ के | " |
| दाष तोला | ४ के | " |
| मटपूजाके दछिना दाम | १८ के | /२ |
| दहि गोटा ४ के | „ | |
| सषर सेर १ ॥ के | । | |
| हिंग तोला | १ के | , |
| माछा पाव | २ के | " |
| मरिच तोला | ४ के | , |
| केराउ माना | ४ के '॥ | |
| जिरा माना | १ के | „ |
| (चौथो लहर) | | |

| | | | |
|---|------|----|--|
| कोटल दहि माना | ८ के | ॥ | |
| दारूवा भारि | ४ के | ॥' | |
| नुन पाथि १ के | १ | | |
| दफे नुन माना | ॥के | ' | |
| सुक्याको माछा कुरूवा | २ के | । | |
| सुक्याको मासु पाव ३ के | । | | |
| जिरा नुन पाव १ के | ,॥ | " | |
| हिगिजिरा मसाला सागपात | के | " | |
| हलुवाइके घासा | " | | |
| धुपवति के | । | | |
| लावा कुरूवा १ के | , | | |
| लेषन्या पिठो कुरवा १ के | , | | |
| दफे भटमास माना ॥ के | S. २ | | |
| नडले छोडायाका अछेताके | | " | |
| दफे छ्यु पाव २ के | ,॥ | | |
| गुड सेर १ के | ,, | | |
| अलैचि तोला ४ के | S.॥ | | |
| सागपातके | ॥. | | |
| काम काममा वालना लाख र भोज समेत अरु | | | |
| षर्च गैर्ह के | ४/ | | |
| पोसाकके | ४ | | |
| - ज्येष्ठ वदि १२ रोजका दिन दोश्रा था पूजा गर्नाको | | | |
| साराजाम वमोजिम सदर तपसीलका रूपैया र जिनसि | | | |
| ६७॥,॥. | | | |
| - गुठीबाट किला वाहिक नचापनु किला वमोजिम | | | |
| कामकाज गामा. कसैले षिचला नगर्नु. | | | |
| - जो येस वन्देजमा रहैन सो येस ष्लोकमा भन्याको | | | |
| पातकि होला. स्वादत्तां परदत्ताम्वा यो हरे द्वैवसुंधराम् | | | |
| षष्ठिवर्ष सहश्राणि विष्टायां जायते कृति इति संम्बत् | | | |
| - १८८७ साल मिति भाद्र वदि १४ रोज ३ शुभम्- | | | |

ष्लोक भागको अनुवाद

आफूले दिएको वा अरूले दिएका जग्गा जसले हरण
गर्दै; त्यो मानिस साठी हजार वर्षसम्म नरकमा कीरा

भइरहन्छ ।^२

व्याख्या-

नेपाल उपत्यकाका तीनबटै तलेजु आगममा विभिन्न कालका मल्ल शासकहरूका साथै केही शाह शासकहरूले समेत राखेर गएका अनेक था पूजाहरू अहिलेसम्म पनि चल्दै आएका छन् । तान्त्रिक विधिपूर्वक गरिने था पूजालाई शासकहरूले विशेष महत्त्व दिई प्रतिवर्ष यसको सञ्चालन अटूट रूपमा भइरहोस् भन्नाका लागि आवश्यक पूजा सामग्री सहित येथेष्ट जग्गा गुठी राखी राम्रो प्रबन्ध मिलाएका हुन्थे; यो कुरा यस विषयमा प्रकाश पार्ने श्रोत सामग्रीहरूका आधारमा थाहा पाइन्छ ।

तलेजुका सम्बद्ध दीक्षाधारी पुरोहित-ब्राह्मण (राजोपाध्याय) कर्मचार्य र जोशीद्वारा गोप्य रूपमा गरिने था पूजाको विधि विधान निकै लामो रहेको बुझिन्छ; यसैकारण यो पूजालाई बिहानको पूजा र रात्र-पूजा गरी दुई चरणमा विभक्त गरेर चलाइन्छ । कुन शासकले कुन तिथिमा र के को उपलक्ष्यमा कुन चाहि था पूजा राखेको हो, सम्बद्ध शासकको नाममा संकल्प गरी (संकल्प वाक्य पढ्देर) पूजा चलाइने हुँदा धार्मिक सांस्कृतिक दृष्टिले मात्र नभएर ऐतिहासिक दृष्टिले पनि था पूजाका ती संकल्प वाक्यहरू विशेष महत्त्वका छन् भन्ने कुरा देखिन आएको छ । प्रमाणका लागि केही शासकका संकल्प वाक्यहरू उदाहरणको रूपमा यहाँ प्रस्तुत गरिन्छ-

तत्कालीन समयमा ललितपुर र भक्तपुरबीचको राजनैतिक सम्बन्ध राम्रो छाँदा ललितपुरका राजा योग नरेन्द्र मल्लले भक्तपुर तलेजुमा एउटा था पूजा राखिदिएका थिए ।^३ उक्त था पूजाको संकल्प वाक्य यस प्रकार छ-

“माघ शुदि १५ मानवत्र जजमानस्य श्री २ जोगनरेन्द्रमलवर्मन श्री २

स्वेष्टदेवता प्रीत्यर्थं प्रतिवर्षं पंचोपचारं देवार्चनं पूजा निमित्यर्थं”^४

रणित मल्लले ‘वाभु’ किल्ला दखल गरेको अवसरमा राखेको था पूजाको संकल्प वाक्य यस प्रकार छ-

“माघ वदि ३ श्री रणित मल्लन दल थाना ॥ वा

भुत्तेलाया ॥ मानगोत्र जजमानस्य श्री २ जयरनजित मल्ल नृपति श्री २ स्वेष्टदेवता प्रीत्यर्थ प्रतिवर्ष पंचोपचार देवार्चन ॥^{१०}

भक्तपुर तलेजुमा था पूजा राख्ने पहिलो शाह शासक 'परम निर्गुणानन्द स्वामी' रणबहादुर शाह देखिन आएको कुराको पुष्टि यस विषयका स्रोत सामग्रीहरूको आधारमा थाहा पाइन्छ । आफ्नी रानी कान्तावती विरामी हुँदा तिनको रोग निवारण होस् भन्ने अभिप्रायले उनले अन्यत्रका प्रसिद्ध देवस्थलमा पूजा-आजा गराउनुका साथै केही था पूजाहरू भक्तपुर तलेजुमा पनि राखिदिएका थिए; ती था पूजाका संकल्प वाक्य यस प्रकार छन्—^{११}

"मार्गसिलवदि ७ महारानीया च्याथा: ॥ कास्यपगोत्र जजमानस्य श्री २ कान्तावति देव्याया: ॥ श्री ३ स्वेष्टदेवता प्रीत्यर्थ प्रतिवर्ष पंचोपचार देवार्चन ॥^{१२}

"पौष शुदि १५ ॥ च्याथाया ॥ कास्यपगोत्र जजमानस्य श्री २ परमनिर्गुनानन्द स्वामि वर्मनस्य ॥ श्री २ स्वेष्टदेवता प्रीत्यर्थ पंचोपचार देवार्चन ॥^{१३}

राजेन्द्र विक्रम शाह वि. सं. १८७३ मा राजा हुँदा उनी नाबालक भएको कारणले उनको नायबी भई ललित त्रिपुरसुन्दरीले शासन चलाएकी थिइन्, अख्लियारी भीमसेन थापा थिए । आफ्नो नायबीकालमा ललित त्रिपुरसुन्दरीले पनि भक्तपुर तलेजुमा था पूजा राखिदिएकी थिइन् । तिनको नामबाट संकल्प गरी चलाइने था पूजाको संकल्प वाक्य यस्तो छ—

"भाघ शुदि ७ ॥ महारानीया ॥ कास्यपगोत्र जजमानस्य श्री २ ललितपुर-

सुन्दरिदेव्याया श्री २ स्वेष्टदेवता प्रीत्यर्थ ... प्रतिवर्ष पंचोपचार"^{१४}

उक्त परिप्रेक्ष्यमा राजेन्द्रविक्रम शाहले पनि भक्तपुर तलेजुमा प्रतिवर्ष पूजा गराउनको निमित्त वि. सं. १८८७ भाद्रमा ३ रोपनी खेत गुठी राखी मोहर गरिदिएको ताम्रपत्र यो हो ।

भक्तपुर तलेजुमा राजेन्द्रविक्रम शाहको नामबाट संकल्प वाक्य पढी चलाइने दुइवटा था पूजाहरू देखिएका

छन् । ती मध्ये वैशाख शुदि ३ रोज (अक्षेय तृतीया)मा गरिने था पूजाको शीर्षक 'नेठा था पूजा' रहेको छ,^{१५} यस दिन गरिने यस था पूजाको संकल्प वाक्य यस्तो छ—

"वैशाख शुदि ३ अक्षतृतीया श्री २ राजेन्द्र महाराजाया ।

॥ ॥ कास्यपगोत्र जजमानस्य श्री २ राजेन्द्रविक्रम शाहदेव वर्मनस्य श्री स्वेष्ट देवता प्रतिवर्ष, निसिंधूत दीपमालिका दातुं श्री २ स्वेष्टदेवता पंचोपचार ..."^{१६}

माघ वदि पंचमीमा गरिने अर्को था पूजाको शीर्षक चाही 'श्रीपञ्चमी था पूजा' रहेको छ^{१७} यस था पूजाको संकल्प वाक्य यस प्रकार छ—

"माघ वदि पंचमी ५ महाराजाया, कासिवगोत्र जजमानस्य श्री ३ राजेन्द्रविक्रम शाहदेव नृपतिनां सगनपरिनारानानिसिंधूत दिप ..."^{१८}

भक्तपुर तलेजुमा विभिन्न कालका शासकहरूले राखिदिएका था पूजाहरू मध्ये हाल (वर्षभरीका सबै था पूजाहरू) २९ वटा मात्र चलेका देखिन्छन् । ती था पूजाहरू पनि 'ठूला' र 'साना' गरी दुई प्रकारका छन् । खासगरिकन 'साना' था पूजाहरू मल्ल शासकहरूका र 'ठूला' था पूजाहरू शाह शासकहरूका छन् । त्यस्तै अनेक नामका था पूजाहरू छन्^{१९} आर्थिक लाभ भएको खुशीयालीमा राखिदिएको था पूजा 'लुँदव या था पूजा' (सुवर्ण लाभ भएकोमा) युद्धमा जितेको उपलक्ष्यमा राखिदिएको था पूजा 'रजाइँ था पूजा' पाँचतले मन्दिर बनेको उपलक्ष्यमा राखिदिएको था पूजाको नाम 'डातापोल था पूजा' लोहाँ देग (भक्तपुर राजदरबारको प्राङ्गण अगाडिको दुगे मन्दिर) बनेको उपलक्ष्यमा राखिदिएको था पूजाको नाम 'लोहाँ देग था पूजा' रहन गएको सन्दर्भतर्फ विचार गर्दा^{२०} आफूले चिताएका र गरेका महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध हुँदा, अनेक कृतिहरूको निर्माण एवं जीर्णोद्धार कार्य पूर्ण हुँदा तथा रोगबाट छुटकारा पाउन आदि अनेक कारणले ती था पूजाहरू शासकहरूले राखेका थिए भन्ने कुरा थाहा हुन्छ ।

उक्त सन्दर्भमा राजेन्द्रविक्रम शाहले भक्तपुर तलेजुमा था पूजा के कारणले राखे; त्यस विषयम यहाँ प्रामाणिक रूपले भन्न नसके तापनि आफूले गरेको वा चिताएको कुनै

खास कार्यको सन्दर्भमा था पूजा राखिदिएका हुन् भन्ने कुरा बुझिन्छ ।

राजेन्द्रविक्रम शाहले था पूजाको निमित्त गुठी संकल्प गर्दा संकल्प वाक्य पढ्ने पुरोहित जदुनाथ पण्डित अर्ज्याल, पानी हाल्ने जनरल भीमसेन थापा र साध लाउने सधियार थरघर भोदनाथ अर्ज्याल यस ताम्रपत्रमा उल्लेख हुन आएका छन् ।

गोरखामा शाह राज्य स्थापनामा गणेश पाँडे, गंगाराम राना आदि अनेक व्यक्तिका साथै नारायणदास अर्ज्यालको पनि योगदान रहेकोले अर्ज्यालहरू पनि (नारायणदास अर्ज्याल र उनका वंशजहरू) गोरखाली भारादारीमा 'थरघर' का नामले सम्मानित भई वंशानुगत रूपमा गोरखाली भारादारीमा स्थान पाएका थिए ।^{१५} गोरखा राज्यको उदयको साथसाथै अधि बढ्ने मौका पाएका पण्डितवर्गमा नारायणदास अर्ज्यालका सन्तानहरू पनि पर्दछन् ।^{१६} यस ताम्रपत्रमा 'संकल्पवाक्य पहन्या पुरोहित जदुनाथ पण्डित अर्ज्याल' भनिएकोले यिनी त्यसताका राजपुरोहित थिए भन्ने कुरा थाहा पाइन्छ ।

राजेन्द्रविक्रम शाहको जन्म वि.सं. १८७० मा भएको थियो ।^{१७} यताबाट यो ताम्रपत्र गरिदिएताका उनी १७ वर्षका भइसकेका थिए । अतः राजनैतिक दाउपेचको भरमा माथि आएका भीमसेन थापाको निमित्त राजेन्द्रविक्रम शाहको 'कम उमेर' पनि शक्ति सुदृढीकरणका लागि सहायक सिद्ध रहेको बुझिन्छ । रणबहादुर शाहको हत्यापछि राजसिंहासनमा लगातार रूपमा बालक राजाहरू (गीर्वाणयुद्ध विक्रम शाह, राजेन्द्रविक्रम शाह) देखा परेका तथा नायव ललित त्रिपुरासुन्दरी पनि आफ्नो पक्षमा भएकोले भीमसेन थापाको शक्ति असीमित रूपमा बढ्दै गएको थियो । यही क्रममा महत्वाकांक्षी भीमसेन थापाले वि.सं. १८६६ मा 'जनरल' पदबी लिई भारदारहरू भन्दा विशिष्ट बन्न पुरेका थिए ।^{१८}

यस ताम्रपत्रमा भक्तपुर जिल्लाका अनेक स्थान र अनेक प्रकारका खेतका नामहरू दिइएका छन् । 'रैकर', 'विर्ता', 'सदावर्त', 'गुठी', 'सुनाविर्ता', 'सुनाविर्ता गुठी' आदि

अनेक नामका खेतहरूको उल्लेख आएकोले तात्कालिक भूमि सम्बन्धी व्यवस्था बुझ्न पनि यो ताम्रपत्र उपयोगी देखिन्छ । 'लुकुन्दोल' (ब्रह्मायणी परिसरमा), 'चान्त्यौ' (चान्त्यली, हनुमानघाट पूर्व), 'पलेवु' (जगतिबाट दक्षिण पूर्व), 'व्याना' (व्यानाम्, निकांसेरा इलाका), 'वपिको', 'यामितामो' (यामिताँ, सल्लाघारीबाट परिचमपटिको पुल), 'वाकादोल', 'मुसुन्याकोल्पा' (मुसुपाको ?), 'मुगथौ' (मुगथली; भौरवेल इलाका), 'वदेको', 'कुम्पाको' (कुम्पारबा, ब्रह्मायणी पूर्व), 'नासाषु', 'मसादोल' (ब्रह्मायणी पछाडि, पूर्व-उत्तर), 'सिमिगाल' (सूर्यविनायक ट्रिलिबस पार्कबाट पूर्व पट्टि धालाखुसिमाथि), 'दिगुपा', 'न्हाकंदोल' (सिपडोल पूर्व), 'व्याथौ' (याते ?) आदि भक्तपुरका अनेक स्थानका नामहरू हुन् । त्यस्तै 'षस्यांग् षोला' (खासाडखुसुड खोला) यस नगरको उत्तरतर्फ छ; 'धालाषुसि' (धालाखुसि) चाहिं दक्षिणतर्फको सानो खोल्सो हो । 'कुम्पाको' र 'नासाषु' का पछिल्तर 'व्वाक' शब्दको उल्लेख पनि यस ताम्रपत्रमा परेका छन् । खोलाको किनारमा लाम्चो परेर गएको खेतलाई नेवारीमा 'व्वाक' भनिन्छ ।

यस ताम्रपत्रमा प्रतिवर्ष था पूजाको निमित्त चाहिने सराजाम खुलाएर दिइएका छन् । सराजामका ती सूचीमा सामग्रीको मोल पनि खुलाएर दिइएको हुँदा तत्कालिक बजारभाउ थाहा पाउन पनि उपयोगी छ । यस ताम्रपत्रमा उल्लिखित सामग्रीको मूल्य-सूची हुँदा त्यस बखत रांगो १२ रु. मा पाइन्थ्यो, बोको १ रु. ५० पैसामा पाइन्थ्यो; सेतो चामल मुरी १ रु. ३ पैसामा पाइन्थ्यो; घिउ १ धार्नीको १ रु.; चिनी १ धार्नीको ४५ पैसा; दूध १ पाथीको ४ आना १ पैसा; अदुवा १ धार्नीको २ पैसा २ दाम; नून १ मानाको ८ पैसा; जिरा १ मानाको ३ पैसा पर्दथ्यो भन्ने कुरा थाहा पाइन्छ । यसै गरी अरु चीजबीजको पनि तात्कालिक बजार भाउ यस ताम्रपत्रबाट थाहा हुन्छ ।

मूल्य सहित खोली सराजाम सूची शिलालेख, ताम्रपत्र आदिमा लेख्ने चलन अव्यवहारिक देखिन्छ । बजार भाउमा क्रमिक रूपले अन्तर आइरहने हुनाले मूल्य तोकी सराजाम राख्ने यस चलनले साविक बमोजिम पूजा चलाउन

गान्हो पर्दै आइरहेको वास्तविकतालाई सहजै बुझ्न सकिन्छ ।

सन्दर्भ-सूची

१. यो ताम्रपत्र यस ठाउँमा छ भन्ने कुराको जानकारी दिनुको साथै अभिलेख पढी त्यसको उतार गर्ने कार्यमा समेत पनि आवश्यक व्यवस्था मिलाई सहयोग गरिदिनु हुने तलेजुका पूजारी श्री सुरेन्द्रवीर कर्माचार्यज्यूप्रति कृतज्ञता प्रकट गर्दछ । त्यस्तै अभिलेख पढ्ने सार्ने कार्यमा सहयोग गर्नु हुने श्री विनोदराज शर्माज्यूप्रति पनि कृतज्ञ छु ।
२. ताम्रपत्र, शिलालेख आदिको अन्त्यतिर यस विषयका एउटै व्यहोरा परेका श्लोकहरू तात्कालिक शाहकालका अभिलेखहरूमा पाइन्छन् । उदाहरणको निमित्त वि.सं. १८५६ को भक्तपुर तलेजुको गीर्वाणयुद्ध विक्रम शाहको ताम्रपत्रलाई लिन सकिन्छ । धार्मिक आस्था, नियम र अनुशासनमा चल्ने त्यस वर्खतको समाजमा यस्ता धार्मिक बन्देजले पनि निरन्तरता प्रदान गर्नमा सहयोग पुऱ्याएको बुझिन्छ । यहाँ यस श्लोकको अनुवाद भाग शाहकालका अभिलेखबाट लिइएको छ,- धनबज्र बजाचार्य, टेक बहादुर श्रेष्ठ- शाहकालका अभिलेख (काठमाडौं, नेपाल र एसियाली अनुसन्धान केन्द्र, वि.सं. २०३७) पृष्ठ ३०० ।
३. यस विषयको योगनरेन्द्र मल्लको सुवर्णपत्र तलेजु मूलचोकको उत्तरपटिको दलानमा छ । यसको अभिलेख 'अभिलेख संग्रह' सातौ भागको पृष्ठ २९-३० मा छापिएको छ ।
४. लेखकको संग्रहमा रहेको 'श्री ३ तलेजुस्के था पूजाया वाक्य' (अप्रकाशित) ठचासफूबाट ।
५. सोही ।
६. सोही ।
७. सोही ।
८. सोही ।
९. पुरुषोत्तम लोचन श्रेष्ठ 'भक्तपुर तलेजुको था पूजा: एक ऐतिहासिक विश्लेषण' प्राचीन नेपाल (काठमाडौं, पुरातत्त्व विभाग, वि.सं. २०४४) संख्या १०४, पृष्ठ १३ ।
१०. पाद टिप्पणी संख्या ४ ।
११. पाद टिप्पणी संख्या ९, पृष्ठ १६ ।
१२. पाद टिप्पणी संख्या ४ ।
१३. सोही, पृष्ठ १३-१७ ।
१४. सोही, पृष्ठ १३-१७ ।
१५. पाद टिप्पणी २, पृष्ठ ५४ ।
१६. सोही, पृष्ठ ३१३ ।
१७. शंकरमान राजवंशी 'ऐतिहासिक कुण्डली' पृष्ठ १८४ ।
१८. पाद टिप्पणी संख्या २ पृष्ठ ४९८ ।